ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 314-317

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-III, Issues-21, YEAR- Sept.-2021

राहुल सांकृत्यायन की कहानियों में समाजवाद

आयुष बघेल E-mail:baghel.ayush92@gmail.com

Received- 22.07.2021, Revised- 25.07.2021, Accepted - 02.08.2021

सारांश : *राहुल जी हिंदी–साहित्य के प्रतिभाशाली कलाकार थे। उनके गंभीर एवं सूक्ष्म अध्ययन, विचारशीलता, चिंतन तथा पर्यटन ने जो बहुमूल्य सामग्री हिंदी भाषा–भाषियों को दी है वह निकट भविष्य में कदाचित् ही कोई कलाकार दे सके। उनकी कृतियों में समाजवादी आदर्शों का आग्रह स्थान–स्थान पर दृष्टिगत होता है। 'वोल्गा से गंगा' कहानीकार का अपूर्व कहानी–संग्रह है, जिसमें उन्होंने मानव–समाज के विकास क्रम का अत्यधिक सुंदर खोजपूर्ण और हृदयस्पर्शी चित्रण किया है। कहानीकार का यह स्तुत्य प्रयास हिंदी–साहित्य की अमर निधि है।*

कुंजीभूत शब्द–प्रतिभाशाली कलाकार, अध्ययन, विचारशीलता, चिंतन।

दिवा– इस कहानी में कहानीकार ने समाज की आदिम साम्यवादी अवस्था का चित्रण किया है, जिसमें नारी के नाम से जन का नामकरण होता था। नारी किसी की व्यक्तिगत संपत्ति नहीं थी। व्यक्ति की अपेक्षा जन का अधिक महत्व था। उनका धर्म था जन की उन्नति एवं रक्षा के लिए समर्पण। उनके स्वच्छंद यौन–सम्बन्ध थे, जिनमें किसी भी प्रकार का सामाजिक कृत्रिम संबंध नहीं प्रत्युत मात्र नारी–पुरुश का प्रकृत संबन्ध था। दिवा और सूर–एक ही माता की संतान–का यौन सम्बन्ध इसका प्रमाण है। कहानीकार ने इस साम्यवादी व्यवस्था पर प्रकाश डालते हुए लिखा है– .....'सारा जन एक छत के नीचे रहता, एक साथ शिकार करता, एक साथ फल या मधु जमा करता। सारे जन की एक नायिका है, सारे जन का संचालन एक समिति करती है, शिकार, नाचना, प्रेम, घर बनाना, चमड़े का परिधान तैयार करना सभी कामों का संचालन जन–समिति करती है, जिसमें जन–माताओं का प्राधान्य है। सभी जन–स्त्री, पुरुश दोनों साथ संपत्ति अर्जित करता है, साथ ही उसे भोगता है, न मिलने पर साथ भूखे मरता है। व्यक्ति जन से अलग अपना कोई अधिकार नहीं रखते। जन की आज्ञा, जन का रिवाज पालन करना उनके लिए उतना ही आसान मालूम पड़ता है, जितना अपनी इच्छा।'

इस साम्यवादी व्यवस्था में मानव अत्यंत सुखी तथा अपने कर्तव्यों के प्रति निःस्वार्थ रूप से उत्तरदायी था। समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सहकारी उत्पादन व्यवस्था थी तथा उत्कृष्ट श्रम विभाजन था।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इस कहानी का उद्देष्य ही साम्यवादी व्यवस्था का चित्रण करना है।

नागदत्त– यह कहानी 335 ई0 पू0 से सम्बन्धित है। इस समय तक समाज में एक व्यवस्था स्थापित हो गई थी–सामंतवादी व्यवस्था। इस व्यवस्था में विजित, असहाय व्यक्ति दास बनाए जाते थे जिनका धर्म था आजीवन दास रहकर अपने स्वामी की सेवा। धर्म के नाम पर मानव की स्वतंत्रता का अपहरण कर उसका शोषण होने लगा था। समाज मूल रूप से–अभिजात वर्ग और दास वर्ग–दो विशिद्वट वर्गो में विभाजित हो गया था। साधन संपन्न वर्ग सदैव अपने दासों का पशुवत् प्रयोग करते थे तथा धर्म की दुहाई देते थे। नागदत्त ने इसी धर्म के विकृत रूप की आलोचना करते हुए विष्णुगुप्त से कहा– 'मैं धर्म को ढोंग समझता हूँ। धर्म केवल परधन –अपहारकों को शांति से परधन उपभोग करने का अवसर देने के लिए है। धर्म ने क्या कभी गरीबों और निर्बलों की सुध ली? विश्व की कोई जाति नहीं है, जो धर्म को न मानती हो, किंतु क्या कभी उसने ख्याल किया कि दास भी मनुष्य हैं। दासों को छोड़ दो, अदास स्त्रियों को ले लो, क्या धर्म ने कभी उन पर न्याय किया? धन चाहिए, तुम दो, चार, दस, सौ स्त्रियों को विवाहित बना सकते हो। वह दासी से बढ़कर नहीं होगी, और धर्म इसे ठीक समझता है। मेरा उचित का मतलब धर्म से उचित नहीं है, बल्कि स्वस्थ मानव का मन जिसे उचित समझता है।

इस कहानी में, नागदत्त के माध्यम से, कहानीकार ने शोषितों के स्वत्वों की रक्षा तथा उन्हें भी मानववत् जीवित रहने के अधिकारों का समर्थन किया है। बहुपत्नी–प्रथा के मूल रहस्य–नारी के प्रति पुरुष यका शोषण–पर कुठाराघात करते हुए कहानीकार ने इस प्रथा को अमानवीय घोषित किया है, क्योंकि अनेक पत्नियाँ रखकर पुरुष उन्हें दासीवत् रखता है, उपभोग करता है। पुरुष की इच्छा ही नारी की इच्छा होती है। उसका कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं होता। अतः कहा जा सकता है कि कहानी का आधार समाजवादी है जिसमें शोषितों को अधिकार–रक्षा के लिए विद्रोही विचारों की अभिव्यक्ति हुई है।

प्रभा– यह 50 ई0 की कहानी है जिसमें कहानीकार ने अश्वघोश के माध्यम से भारतीय वैदिक धर्म का शोषण नीति पर आक्षेप करते हुए दलित वर्ग–नारी, शूद्र, चांडाल, दास–के प्रति मानवोचित व्यवहार करने का आग्रह किया है। अश्वघोश ने युगीन समाज के अंधकार पक्ष को स्पष्ट करते हुए प्रभा से कहा–

'मुझे ब्राह्मणों के पाखंड से अपार घृणा है। एक ओर वह कहते हैं कि हम अपने वेद शास्त्र को मानते हैं। मैंने बड़े परिश्रम और श्रद्धा से उनकी सारी विद्याएं पढ़ीं, किंतु वह क्या मानते हैं, मुझे तो कुछ समझ में नहीं आता। शायद वह केवल अपने स्वार्थ को मानते हैं। जब किसी बात को उनसे पुराने

शोध अध्येता– यू0जी0सी0 नेट, हिन्दी विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ0प्र0), भारत

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-III, Issues-21, YEAR- Sept.-2021

ऋषियों के वचनों से निकाल कर दिखलाओ, तो कहते हैं–इसका आजकल रिवाज नहीं है रिवाज को ही मानों या ऋषि–वाक्यों को ही। यदि पुरानी वेद–मर्यादा को किसी ने तोड़ा, तभी न नया रिवाज चला ? कायर, डरपोंक, स्वार्थी ऐसों को ही कहते हैं। बस, इन्हें मोटे बछड़ों का मांस और अपनी भूयसी–दक्षिणा चाहिए, यह कोई भी ऐसा काम करने के लिए तैयार हैं, जिससे इनके आश्रयदाता राजा और सामन्त प्रसन्न हों।

'गरीबों और जिनको यह नीच जातियाँ कहते हैं, वह सभी गरीब हैं–के लिए इनके धर्म में कोई स्थान नहीं है।

'हाँ, यवन, शक, आभार दूसरे देशों से आई जातियों को इन्होंने क्षत्रिय, राजपूत मान लिया, क्योंकि उनके पास प्रभुता थी, धन था। उनसे इन्हें मोटी–मोटी दक्षिणा मिल सकती थी। किंतु अपने यहाँ के शूद्रों, चांडालों, उदासों को इन्होंने हमेशा के लिए वही रखा। जिस धर्म से आदमी का हृदय ऊपर नहीं उठता, जिस धर्म में आदमी का स्थान उसकी थैली या डंडे के अनुसार होता है, मैं उसे मनुश्य के लिए भारी कलंक समझता हूँ।

'और जो स्त्री मात्र होने से किसी को नीच कहता है, उसे मैं घृणा की दृष्टि से देखता हूँ।

'यवनों में स्त्रियों का सम्मान तब भी दूसरे से ज्यादा है। इनमें आज भी चाहे निस्संतान मर जाय, किंतु एक स्त्री के रहते दूसरे से ब्याह नहीं हो सकता।

'और यह ब्राह्मण सौ–सौ ब्याह कराते फिरते हैं, सिर्फ दक्षिणा के लिए, छिः। मैं खुश हूँ, जो कोई यवन ब्राह्मण धर्म को नहीं मानता।'

समाजवाद इसीलिए धर्म को मान्यता नहीं देता, क्योंकि उससे साधनहीन वर्ग का शोषण होता है। समाजवाद का धर्म है मानवतावाद, जिसमें व्यक्ति का हित नहीं प्रत्युत लोक–कल्याण की भावना निहित है, वर्गहीनता है। अस्तु, कहानी स्पष्ट रूप से समाजवादी आदर्शो से प्रभावित है।

बाबा नूरदीन– इस कहानी में कहानीकार ने साधन संपन्न वर्ग के शोषण के प्रति असंतोष व्यक्त करते हुए, समाज के हित के लिए, उनके उन्मूलन का समर्थन बाबा नूरदीन के माध्यम से किया है। बाबा नूरदीन ने ज्ञानदीन से कहा–

'आमिल–अमले तो गये, यये बनिया–महाजन और मर जाते तो चैन की वंशी बजती।'

"बहुत लूटते हैं और उनके ये बडे–बड़े मठ, बड़े–बड़े लंगर–सदाव्रत तो इसी लूट से चल रहे हैं।'

'कहते हैं धनी नहीं रहने से धर्म नहीं चलेगा। मैं कहता हूँ जब तक धनी रहेंगे तब तक अधर्म का पलड़ा भारी रहेगा।'

'ज्ञानी–ध्यानी, पीर–पैगंबर, ऋषि–मुनि से बढ़कर धर्म पर चलने वाला कौन होगा ? लेकिन उनके पास एक कमली, एक कफनी से वेशी क्या था ?'

'इंसान भाई–भाई नहीं बन सकते, जब तक गरीबों को कमाई से पलने वाले अमीर हैं। और सुल्तान भी मित्र ज्ञानदीन। आदमी आदमी में फूट उालने वाली यहीं इकट्ठी सिमटा माया है, किंतु, उसकी शान–शौकत भी तो नहीं चले, अगर कमेरों को कमाई न नोचें?

'उन दिनों की उम्मीद रखें, लिहाजा जब सभी गोरखधंधे मिट जायेंगे और पृथ्वी पर प्रेम का राज्य कायम होगा।'

स्पष्ट है कि कहानी में मानव मात्र में समानता भ्रातृत्व–भाव और ऐसे धर्म की स्थापना का आग्रह है जिससे किसी भी व्यक्ति के विकास एवं शांति में हस्तक्षेप न हो। कहानी मूल रूप से समाजवादी है।

रेखा भगत– इस कहानी में 'फ्रांस की राज्य क्रांति' के उद्देश्यों के समाजवादी आदर्श–समानता, स्वतंत्रता, भ्रातृत्व–का चित्रण कर कहानीकार ने आदर्श समाज की स्थापना का समर्थन किया है, जिसमें वर्गहीनता, शोषणहीनता का प्राधान्य होता है। जमींदारी का उन्मूलन, प्रजातंत्र की रक्षा, सर्वहारावर्ग का हित, सेठों साहूकारों के धन–एकत्रीकरण का विरोध, साम्राज्यवाद की नृशंशता का चित्रण इस कहानी की आत्मा है। कोलमैन ने तिकौड़ी दे से कहा– '.....'फ्रांस की जनता का उद्देष्य प्रजातंत्र से भी ऊपर (समाजवादी) था, वह मनुष्य मात्र की समानता, स्वतंत्रता भ्रातृभाव का राज्य स्थापित करना चाहती थी।'

'हमारे देश के लिए भी ?'

'तुम मनुष्य हो कि नहीं।'

'साहबों की नजर में तो हम मनुश्य नहीं जँचते।'

'जब तक समानता, स्वतंत्रता, भ्रातृत्वभाव का शासन सारी पृथ्वी पर, गोरे काले सारे मनुष्यों में नहीं कायम होता, तब तक मनुष्य, मनुष्य नहीं हो सकता है।'

कहानी में आद्योपांत वर्तमान समाज के अंधकार पक्ष का विरोध कर समाजवादी आदर्शो की प्रतिस्थापना का प्रयत्न किया गया है।

सफदर– यह कहानी समाजवादी सिद्धांतों के प्रतिपादन के उद्देष्य से ही प्रणीत मालूम होती है, जिसमें कहानीकार ने प्रथम विश्व–युद्ध के मूल कारण पूँजीवादी धन लोलुपता, शोषण, मुनाफाखोरी के आधार साम्राज्यवादी नीति पर कुठाराघात करना है। सफदर ने शंकर से अपने क्रांतिकारी विचारों को व्यक्त करते हुए कहा–

'..... पिछला महायुद्ध (1914–18) दुनियां में भारी आग लगा गया है वह युद्ध था ही साम्राज्यवाद की उपज–पूँजी और तैयार माल के लिए सुरक्षित बाजार को पकड़ रखने या छीनने का परिणाम। जर्मनी ने नये उपनिवेश लेना चाहे और धरती बंट चुकी थी। इसलिए उन्हें लड़कर ही छीना जा सकता था।..... जर्मनी उसमें असफल रहा, लेकिन साथ ही साम्राज्यवाद की नींद में जबर्दस्त

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-III, Issues-21, YEAR- Sept.-2021

खलल डालने वाला एक और दुश्मन तैयार हो गया, यानी साम्यवाद–चीजें नफा के लिए नहीं, बल्कि मानव–वंश को सुखी और समृद्ध बनाने के लिए पैदा की जायं।.....साम्यवाद कहता है नफा का ख्याल छोड़ों। अपने राश्ट्र या सारे संसार को एक परिवार मानकर उसके लिए जितनी आवश्यकताएं हो उन्हें पैदा करो, हर एक से उसकी क्षमता के अनुसार काम लो, हर एक को उसकी आवश्यकता के मुताविक जीवनोपयोग सामग्री दो, हाँ, जब तक आवश्यकता पूरी करने भर के लिए कल–कारखाने और कारीगर इंजीनियर न हों, तब तक काम के अनुसार दो, और यह तभी हो सकता है, जबकि वैयक्तिक संपत्ति का अधिकार न भूमि पर रहे, न फैक्टरी पर, अर्थात सारे उत्पादन के साधनों पर उस महापरिवार का अधिकार हो।' यह कहानी स्पष्ट रूप से समाजवादी है।

सुमेर– इस कहानी का नायक समाजवादी है। सुमेर एक हरिजन (चमार) का पुत्र था जिसने अपनी प्रतिभा तथा छात्रवृत्ति और दूसरों की सहायता से बी0ए0 पास कर एम0ए0 का अध्ययन प्रारम्भ किया। उसे युगीन गांधीवादी विचारधारा के प्रति घृणा थी, क्योंकि उसका आधार अहिंसा और समझौतावाद है, जिससे सर्वहारावर्ग का किसी भी प्रकार कल्याण संभव नहीं। उसने गांधीवाद का विरोध करते हुए ओझा से कहा–

'.....मैं हरिजन नाम से सख्त घृणा करता हूँ। मैं 'हरिजन' पत्र को बिल्कुल पुराण–पंथी–भारत को अंधकार युग की ओर खींचने वाला–पत्र समझता हूँ और गांधी जी को अपनी जाति का जबर्दस्त दुश्मन।'

'आप अपनी जाति पर गांधी जी का कोई उपकार नहीं मानते ?'

'उतना ही उपकार मानता हूँ जितना मजदूर को मिल मालिक का मानना चाहिये।'

'गांधी जी मालिक बनने के लिए नहीं कहते।'

'जमींदारों, पूँजीपतियों, राजाओं को वली–संरक्षक–गार्जियन–कहने का दूसरा अर्थ क्या हो सकता है?गांधी जी का हमारे साथ प्रेम इसीलिये है कि हम हिंदुओं में से निकल न जायं। हिंदुओं को हजार वर्शो से सस्ते दासों की जरूरत थी और हमारी जाति ने उसकी पूर्ति की। पहले हमें दास ही कहा जाता था, अब गांधी जी 'हरिजन' कहकर हमारा उद्धार करने की बात करते हैं। शायद हिंदुओं के बाद हरि ही हमारा सबसे बड़ा दुश्मन रहा है। ऐसे हरि का जन बनना हम कब पसंद करेगें ?

'तो आप भगवान को भी नहीं मानते ?'

'किस उपकार पर ?हजारों वर्षो से हमारी जाति पशु से भी बदतर, अछूत, अपमानित समझी जा रही है और उसी भगवान के नाम पर, जो हिंदुओं की बड़ी जातियों की जरा–जरा सी बात पर अवतार लेता रहा, रथ हाँकता रहा, किन्तु सैकड़ों पीढ़ियों से हमारी स्त्रियों की इज्जत बिगाड़ी जाती रही। हम बाजारों में सोनपुर के मेले के पशुओं की तरह बिकते रहे, आज भी गाली, मार खाना, भूखे मरना ही हमारे लिए भगवान की दया बतलाई जाती है। इतना होने पर भी जिस भगवान के कान पर जूँ तक नहीं रेंगी, उसे माने हमारी बला।'

सुमेर ने आगे अहिंसा, धार्मिक रूढ़ि, पुराण, वेद, ऋशियों–मुनियों की वाणियों, वर्ण व्यवस्था आदि पर कुठाराघात करते हुए कहा–

'गांधी जी की अहिंसा, खुदा बचाए उससे। जो अहिंसा किसानों और मजदूरों पर कांग्रेसी सरकार द्वारा चलाई जाती गोलियों का समर्थन करें और फासिस्त लुटेरों के सामने निहत्था बन जाने के लिए कहे, उसे समझना हमारे लिए असंभव है।

चर्खा–कर्घावाद शोषण की असली दवा साम्यवाद के रास्ते में भारी बाधक है। कितने लोग बेवकूफी से समझते हैं, कि शोषण रोकने के लिए साम्यवाद–कल कारखानों पर जनता का अधिकार से अच्छी दवा चर्खा–कर्घावाद है। इसी नियत से दुनिया को मिल का कपड़ा पहनाने वाले सेठ चर्खा के भक्त हैं और गांधी जी इसे भली भाँति समझते हैं।

'यह उनकी नीयत पर हमला है?

'उनकी एक–एक हरकत मुझे शोषितों––और भारत में सबसे अधिक शोषित हमारी जाति है–के लिये खतरनाक है। हमें दिमागी गुलामी के अड्डे शोशकों के जबर्दस्त पोशक पुरोहितों को दूकानों–इन मन्दिरों में ताला लगवाना चाहिये–और उल्टे हमें फँसाने के लियेि गाँधी जो उन्हें खुलवाना चाहते है।

पुरानी पोथियों, अमीरों के टुकड़े से पलने वाले सन्तों की बानियों को यदि हम आग में नहीं जलाते, तो सात ताले में तो बंद कर ही देना चाहिये, किन्तु उन्हीं की दुहाई देकर गाँधी जी हमें गुमराह कर उसकी आसक्ति योग से लच्छेदार व्याख्या करते हैं, इन सबके बाद हरिजन–उद्धार सिर्फ ढोंग नही तो क्या है?'

'तो क्या आप नहीं चाहते कि अछूत सवर्ण सब एक हो जायं?'

'काल ने हमें एक कर दिया है, किंतु गाँधी जी के प्रिय धर्म, भगवान् पुराण पंथिता उसे हमें समझने नहीं देती। आपके पूर्वजों ने वर्ण व्यवस्था की लोहे की दीवार खड़ी कर बहुत चाहा कि रक्त सम्मिश्रण न होने पाए, किन्तु चाह नहीं पूरी हुई, इसके सबूत हम आप मौजूद हैं। बोल्गा और गंगातट के खून आपस में मिश्रित हो गये हैं।

आज वर्ण (रंग) को लेकर झगड़ा नहीं नहीं है–आपको कोई ब्राह्मण जाति से खारिज करने के लिये तैयार नहीं है। सारी बातें ठीक हो जायें, यदि धर्म, भगवान, पुराण–पंथिता हमारा पिंड छोड़ दें, और यह तब तक नहीं हो सकता जब तक कि शोषक और गाँधी जी जैसे उनके पोपक मौजूद हैं।'

स्पष्ट है कि कहानीकार ने इस कहानी में शोषक–शोषित वर्ग के संघर्श के मूल कारणों पर

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-III, Issues-21, YEAR- Sept.-2021

प्रकाश डालते हुये, वर्तमान युग की गाँधीवादी और शोषणमूलक एवं रूढ़िवादी नीति का खंडन तथा समाजवादी व्यवस्था का समर्थन किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आज की समस्यायें– राहुल सांकृत्यायन।
2. जीने के लिये– राहुल सांकृत्यायन।
3. भागों नहीं बदलो– राहुल सांकृत्यायन।
4. मधुर स्वप्न– राहुल सांकृत्यायन।
5. मानव समाज– राहुल सांकृत्यायन।
6. साम्यवाद ही क्यों– ? राहुल सांकृत्यायन।
7. हिन्दी गद्य साहित्य पर समाजवाद का प्रभाव– डा0 शंकरलाल जायसवाल, सरस्वती प्रकाशन मन्दिर नया बैरहना, इलाहाबाद।

*****